nwda.gov.in

कभी डेंजर जोन में था, अब जल संकट से निपटने में बना रोल माडल

'मोर गांव मोर पानी' अभियान ने राजनांदगांव जिला को बनाया जल संरक्षण में देशभर में अग्रणी

ऐसे काम करते हैं आधुनिक तरीके

इंजेक्शन वेल : बारिश का पानी फिल्टर टैंक से गुजरने के बाद सीधे गहरे बोरवेल या कुएं में पहुंचाया जाता है।

पर्कोलेशन टैंक : वर्षा जल को बड़े टैंक में जमा किया जाता है, जो धीरे-धीरे रिसकर भूजल स्तर को रिचार्ज करता है।

रिचार्ज शाफ्ट : ये शाफ्ट फिल्टरिंग लेयर के जरिए गंदगी हटाकर शुद्ध पानी को सीधे जमीन के नीचे पहुंचाते हैं।

प्री-मानसून डाटा दर्ज कर लिया गया है और पोस्ट-मानसून डाटा आने के बाद इसके फायदे पूरी तरह स्पष्ट हो जाएंगे।
सुरुचि सिंह, सीईओ, जिला पंचायत

राजनांदगांव के बरगा गांव में रिचार्ज शाफ्ट की मदद से हैंडपंप और बोर के आसपास भूजलस्तर में सुधार हुआ है ● नईदुनिया

सवा लाख महिलाएं अभियान से जुड़ीं

इस मुहिम में प्रशासन ने महिलाओं की भागीदारी भी सुनिश्चित की। अभियान में विभिन्न महिला समूहों की एक लाख 20 हजार महिलाएं शामिल हुईं। इन्होंने जल संरक्षण की शपथ ली और ग्रामीण क्षेत्र में नीर और नारी जल यात्रा के माध्यम से जागरूकता फैलाई। इसके अलावा सोख्ता गड्ढों और अन्य जल संचयन अधोसंरचना के निर्माण में भी श्रमदान कर अपनी सहभागिता दी। सैकड़ों समूह की महिलाओं ने इस वर्ष आठ हजार से अधिक सोख्ता गड्ढों का निर्माण किया है।

जागरण विशेष

विक्रम बाजपेई ● नईदुनिया

राजनांदगांव: पानी की किल्लत से जूझते इलाकों के लिए छत्तीसगढ़ का राजनांदगांव जिला एक उदाहरण बना है। यहां चलाए गए 'मोर गांव मोर पानी' (मेरा गांव, मेरा पानी) अभियान ने जल संरक्षण के दिशा में इसे देश का अग्रणी जिला बना दिया है। इसके जरिये 662 से अधिक गांवों में 40,000 से ज्यादा जल संरचनाएं स्थापित की गईं। इनमें 37 हजार से अधिक स्टैगर्ड ट्रेंच और सोख्ता गड्ढा शामिल हैं।

केंद्रीय भूजल बोर्ड की रिपोर्ट ने गिरते भू-जल के खतरे से आगाह किया था। जिले के तीन ब्लाक डेंजर जोन में थे। इसके बाद प्रशासन ने नवाचार की राह पकड़ी। 22 मार्च 2022 में विश्व जल दिवस पर 'मोर गांव मोर पानी' अभियान शुरू किया गया, ताकि गांवों में वर्षा जल का संरक्षण और भूजल स्तर को बढ़ाया जा सके। इसके तहत जिला पंचायत ने ग्रामीणों के सहयोग से आधुनिक जल संरचनाएं तैयार कीं। इनमें स्टैगर्ड ट्रेंच और विभिन्न आकार के सोख्ता गड्ढा यानी रिचार्ज पिट शामिल हैं, जो वर्षा जल को सीधे जमीन में पहुंचाते हैं। साथ ही 400 इंजेक्शन वेल, 1200 से अधिक पर्कोलेशन टैंक और 273 से अधिक रिचार्ज शाफ्ट भी बनाए गए हैं।

इन सभी संरचनाओं को न्यूनतम लागत व श्रमदान से तैयार किया गया है, जिसमें मनरेगा और महिला समूहों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिला पंचायत की सीईओ सुरुचि सिंह के अनुसार, इन संरचनाओं के लिए उपयुक्त स्थानों का चयन जीआइएस और राजस्व नक्शों की मदद से किया गया। सेंट्रल ग्राउंड वाटर बोर्ड के विशेषज्ञों ने भी सहयोग किया है। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय जायजा लेने आ चुके हैं।

मध्य प्रदेश सहित तीन राज्यों ने दिखाई रुचि: राजनांदगांव की इस मुहिम पर पूरे देश की नजर है। नेशनल वाटर मिशन में इसे दो बार प्रस्तुत किया गया है। मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, केरल, तेलंगाना जैसे राज्यों ने इस माडल को अपनाने में रुचि दिखाई है।

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।